Lecture Methods

Dr. Kanak Lata Vishwakarma
Associate Professor,
Harishchandra P.G. College, Varanasi

व्याख्यान विधि का स्वरूप

- व्याख्यान का अर्थ किसी तथ्य विषय को विस्तार से समझाना होता है। शिक्षण में इस विधि का प्रयोग प्राचीन काल से होता रहा है। इस विधि में शिक्षक की ही प्रमुख भूमिका होती है। इसलिए इसे शिक्षक केन्द्रित शिक्षण विधि माना जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से ही यह विधि अत्यन्त पुरानी है। भारत में विदेशी प्रणाली से जब शिक्षा का आरम्भ हुआ तभी से इस विधि की शुरूआत हुई और आज सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली विधियों में से एक है। इसके द्वारा छात्रों में ज्ञान और सूचना का विकास होता है। इसे परंपरागत प्रभुत्ववादी विधि भी कहते हैं।

व्याख्यान विधि के पद

- यहाँ पद **(Steps)** का अर्थ **Process** से है जिसमें प्रत्यय और सूचना को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। वह पद कहलाता है।
- 1. व्याख्यान की विषयवस्तु का निर्धारण करना
- 2. अध्यापक द्वारा योजना बनाना।
- **(a)** छात्रों का पूर्व ज्ञान निर्धारण
- **(b)** शिक्षण का उद्देश्य
- **(c)** पाठ्यवस्तु की रूपरेखा
- **(d)** उचित उदाहरण को शामिल करना।
- 3. अध्यापक द्वारा व्याख्यान देना या प्रस्तुतीकरण तथा छात्रों द्वारा ग्रहण करना।
- 4. सारांश प्रस्तुत करना।

व्याख्यान विधि का प्रयोग कब किया जाय !

- 1. संक्षिप्तीकरण हेतु **(To Summarise)**
- 2. प्रेरणा प्रदान करने हेतु **(To Motivative)**
- 3. समय बचाने हेतु **(To save time)**
- 4. स्पष्ट करने हेतु **(To clarify)**
- 5. गृह कार्य देने हेतु **(To give assignment)**
- 6. अतिरिक्त विषयवस्तु प्रस्तुत करने हेतु **(To present additional material)**

व्याख्यान विधि के गुण (Merits of lecture methods)

- ✓इस विधि द्वारा विषय का स्पष्टीकरण अधिक से अधिक किया जा सकता है।
- ✓इस विधि द्वारा समय एवं शक्ति की बचत होती है।
- ✓इस विधि द्वारा छात्रों को सुनकर सीखने का अनुभव एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकता है।
- ✓उत्तम ढंग से तैयार करके दिया हुआ व्याख्यान छात्रों को प्रेरित करता है।
- ✓इसके द्वारा छात्रों की तर्कशक्ति का विकास किया जाता है।
- ✓इस विधि के द्वारा कठिन एवं जटिल बिन्दुओं को सरलता से स्पष्ट किया जाता है।

व्याख्यान विधि के दोष (Demerits of Lecture method):

- ✓यह पद्धति छात्रों को निष्क्रिय श्रोता बना देती है।
- ✓इस पद्धति में ''करके सीखने'' के सिद्धान्त के लिए कोई स्थान नहीं है।
- ✓यह विषय के सैद्धान्तिक पक्ष पर अधिक बल देती है।
- ✓इसमें बालक को मौलिक चिन्तन करने के लिए कोई अवसर नहीं मिल पाता है।
- ✓इस पद्धति की सफलता व्याख्यानकर्ता पर अधिक निर्भर है।
- ✓यह पद्धति छात्रों में स्वाध्याय की आदत का निर्माण करने में सफल नहीं हो पाती।

व्याख्यान विधि का प्रयोग करते समय सावधानियाँ (Precautions while using lecture method)

- ✓व्याख्यान एक कला है जिसमें सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए।
- ✓व्याख्यान देने वाले को विषय का पूरा ज्ञान होना चाहिए।
- ✓व्याख्यान की विषयवस्तु विद्यार्थियों के रूचि तथा मानसिक स्तर के अनुसार क्रमबद्ध रूप में संगठित होना चाहिए।
- ✓व्याख्यान देते समय सरल भाषा तथा सार्थक एवं रोचक दृष्टांतों का प्रयोग करना चाहिए।
- ✓व्याख्यान देते समय महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर बल देना चाहिए।
- ✓व्याख्यान देते समय उचित शिक्षण सामग्री का प्रयोग करना चाहिए।

सुझाव (Suggestions) :

- ✓व्याख्यान देने से पूर्व विषयवस्तु को सुनियोजित कर लिया जाय।
- ✓अध्यापकों को कुशल व्याख्यानकर्ता होना आवश्यक है।
- ✓व्याख्यान देने से पूर्व व्याख्यान की रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए इससे अध्यापक को मुख्य बिन्दु याद करने में सुविधा होगी।
- ✓भाषा का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- ✓स्वतंत्रतापूर्वक बातचीत के रूप में व्याख्यान देने की चेष्टा करनी चाहिए।
- ✓अध्यापक को अपनी भाषा शैली, उच्चारण तथा हाव–भाव का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- ✓बीच–बीच में प्रश्न अवश्य पूछते रहना चाहिए इससे छात्र व्याख्यान के प्रति सजग रहेंगे।
- ✓आवश्यक स्थानों उदाहरणों, दृष्टांतों, कहानियों का सहारा ले लेना चाहिए।

Thank you

- For any queries E-mail at : kanaklata1969@yahoo.com